IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारत–चीन राजनीतिक संबंधः चुनौतियां एवं संभावनाएं

[1]डॉ बबीता, [2]साधना

[1]शोधनिर्देशिका, सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान एवं लोक प्रशासन विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक।

[2]शोधार्थी, राजनीति विज्ञान एवं लोक प्रशासन विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक।

सारांशः

भारत और चीन, दो प्राचीन सभ्यताएँ, जिनकी जड़ें हज़ारों साल पुराने इतिहास में हैं, ने सदियों से आपसी सांस्कृतिक, आर्थिक, और धार्मिक संबंध बनाए हैं। हालांकि आधुनिक समय में उनके संबंधों में उतार–चढ़ाव देखने को मिला है। इनकी राजनीतिक पृष्ठभूमि को समझने के लिए हमें ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य से लेकर वर्तमान तक के घटनाक्रमों पर ध्यान देना होगा। भारत और चीन के बीच संबंध प्राचीन काल से हैं, जब दोनों सभ्यताओं ने व्यापार और बौद्ध धर्म के प्रसार के माध्यम से संपर्क स्थापित किया। प्राचीन समय में सिल्क रूट (रेशम मार्ग) के जरिए दोनों देशों के बीच व्यापार होता था। भारत ने चीन को कपास, मसाले और अन्य वस्त्र निर्यात किए, जबकि चीन से रेशम और कागज जैसे उत्पाद भारत आए। भारतीय बौद्ध भिक्षु, जैसे फाहियान और ह्वेनसांग, ने चीन का दौरा किया और बौद्ध धर्म के प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसने सांस्कृतिक आदान–प्रदान को और गहरा किया। ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के दौरान भारत और चीन के बीच संबंध सीमित हो गए। इस समय चीन पर भी पश्चिमी शक्तियों का प्रभुत्व था। ब्रिटिश भारत ने चीन को अफीम निर्यात किया, जिसने चीनी समाज में गंभीर संकट उत्पन्न किया। अफीम युद्ध ने चीन को कमजोर किया और उसकी संप्रभुता पर गहरा असर डाला। ब्रिटिश शासन ने भारत–चीन संबंधों में स्थायी सीमाओं और कूटनीतिक संपर्कों को न्यूनतम स्तर पर बनाए रखा। भारत और चीन दोनों ने 20वीं सदी में अपनी स्वतंत्रता और संप्रभुता को पुनः प्राप्त किया। माओत्से तुंग के नेतृत्व में चीन में कम्युनिस्ट सरकार की स्थापना हुई। चीन के पीपुल्स रिपब्लिक की स्थापना ने नए राजनीतिक समीकरण बनाए।

प्रस्तुत शोधपत्र में भारत–चीन राजनीतिक संबंध चुनौतियां एवं संभावनाएं को जानने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्दः भारत चीन राजनीतिक संबंध, चुनौतियां और संभावनाएं।

भूमिकाः

भारत और चीन के राजनीतिक संबंधों का इतिहास प्राचीन काल से लेकर आधुनिक समय तक बहुत ही जटिल और विविधतापूर्ण रहा है। प्राचीन भारत और चीन के बीच सांस्कृतिक और व्यापारिक संपर्क थे, जिनमें सिल्क रूट और बौद्ध धर्म का प्रसार प्रमुख थे। दोनों देशों के बीच 1954 में पंचशील समझौता हुआ, जिसमें दोनों ने शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व और आपसी संप्रभुता का सम्मान करने की सहमति दी। लेकिन, 1962 में सीमा विवाद को लेकर दोनों देशों के बीच युद्ध हुआ, जो भारत–चीन संबंधों में एक बड़ा मोड़ था। इसके बाद, दोनों देशों के रिश्तों में काफी तनाव आया। 1990 के दशक में, भारत और चीन ने सीमित कूटनीतिक संपर्कों की पुनः शुरुआत की, और 2000 के बाद आर्थिक और व्यापारिक संबंधों में सुधार हुआ। हालांकि, सीमा विवाद और सुरक्षा मुद्दों के कारण इन संबंधों में लगातार उतार–चढ़ाव देखने को मिले। 2020 में गलवान घाटी में संघर्ष ने दोनों देशों के रिश्तों में फिर से तनाव बढ़ा दिया। वर्तमान में, भारत और चीन को अपने संबंधों को स्थिर और सहयोगी बनाने के लिए शांतिपूर्ण संवाद और विश्वास निर्माण की आवश्यकता है।

सांस्कृतिक और व्यापारिक संबंधः

भारत और चीन के बीच प्राचीन काल में सांस्कृतिक और व्यापारिक संबंध काफी मजबूत थे, जो सिल्क रूट और धार्मिक आदान–प्रदान के माध्यम से स्थापित हुए। दोनों देशों की प्राचीन सभ्यताएँ हजारों साल पुरानी हैं, और इनकी आपसी संपर्कता ने इनकी सांस्कृतिक और आर्थिक धारा को एक दूसरे से जोड़ा।

सिल्क रूट और व्यापारिक संपर्कः

भारत और चीन के बीच सबसे महत्वपूर्ण संपर्क का मार्ग सिल्क रूट था, जो व्यापार और सांस्कृतिक आदान–प्रदान का मुख्य माध्यम था। सिल्क रूट चीन से मध्य एशिया होते हुए भारत तक जाता था और इसके माध्यम से दोनों देशों के बीच वस्त्र, मसाले, रत्न, धातु और अन्य बहुमूल्य सामानों का आदान–प्रदान होता था। चीन से भारत रेशम, चाय, कागज, और चीनी मिट्टी के बर्तन जैसे उत्पाद आते थे, जबकि भारत से मसाले, रत्न, कपड़ा, और अन्य सांस्कृतिक वस्तुएं चीन जाती थीं। यह व्यापार न केवल दोनों देशों की आर्थिक स्थिति को मजबूत करता था, बल्कि सांस्कृतिक धारा को भी एक दूसरे से जोड़ता था।

धार्मिक और सांस्कृतिक आदान–प्रदानः

भारत और चीन के बीच सांस्कृतिक संबंधों का एक और महत्वपूर्ण पहलू बौद्ध धर्म का प्रसार था। भारतीय बौद्ध भिक्षु जैसे फाहियान, ह्वेनसांग और बोधिधर्म ने चीन का दौरा किया और बौद्ध धर्म के सिद्धांतों को

वहाँ प्रचारित किया। इस प्रक्रिया ने भारतीय संस्कृति को चीन में प्रवेश कराया और दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक संबंधों को और मजबूत किया। ह्वेनसांग, जो 7वीं शताब्दी में भारत से चीन गया था, ने अपनी यात्रा के दौरान भारतीय संस्कृत ग्रंथों का चीनी में अनुवाद किया और बौद्ध धर्म के कई महत्वपूर्ण ग्रंथों का संरक्षण किया। फाहियान और ह्वेनसांग के यात्रा वृत्तांतों ने न केवल चीन में बौद्ध धर्म के प्रसार में मदद की, बल्कि भारतीय दर्शन, साहित्य और धार्मिक विचारधारा को भी वहाँ के लोगों तक पहुँचाया।

भारत और चीन के साहित्यिक और दार्शनिक संबंधः

भारत और चीन के बीच साहित्यिक और दार्शनिक विचारों का भी आदान–प्रदान हुआ। भारतीय गणित, खगोलशास्त्र, आयुर्वेद और ज्योतिष विज्ञान का प्रभाव चीन में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। भारतीय विद्वान चीन में अपने ज्ञान का प्रसार करते थे, और भारतीय गणितज्ञों के सूत्रों और सिद्धांतों को चीनी विद्वानों ने अपनाया और उनका विस्तार किया। चीन के विचारक, जैसे कन्फ्यूशियस, और भारतीय दार्शनिक, जैसे कि बोधिधर्म और आचार्य शंकर, दोनों ही देशों की धार्मिक और दार्शनिक धारा के प्रमुख स्तंभ थे। कन्फ्यूशियस के विचारों ने चीन की सामाजिक संरचना और नैतिकता को गहराई से प्रभावित किया, जबकि भारतीय दार्शनिक विचारधारा ने चीन में ध्यान और साधना की परंपरा को बल दिया।

मध्यकाल और औपनिवेशिक कालः

भारत और चीन के बीच मध्यकाल और औपनिवेशिक काल में सांस्कृतिक, व्यापारिक और राजनीतिक संबंधों में उल्लेखनीय कमी आई। यह अवधि दोनों देशों के लिए ऐतिहासिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण रही, क्योंकि इस दौरान दोनों देशों पर बाहरी आक्रमण और साम्राज्यवादी शक्तियों का दबाव था।

मध्यकाल (7वीं से 14वीं शताबदी):

मध्यकाल में भारत और चीन के बीच सीमित संपर्क रहे, हालांकि कुछ महत्वपूर्ण घटनाएँ इस काल में घटीं। भारतीय बौद्ध भिक्षु जैसे ह्वेनसांग ने 7वीं शताबदी में चीन का यात्रा की थी, और उसने भारत के ज्ञान और बौद्ध धर्म के प्रसार में अहम भूमिका निभाई थी। इसके बावजूद, भारत और चीन के बीच स्थिर व्यापारिक या कूटनीतिक संबंधों की कोई बड़ी पहल नहीं हुई। चीन में तांग वंश और भारत में गुप्त और मध्यकालीन राजवंशों के बीच सीधी संपर्क सीमित रहे, हालांकि कुछ व्यापारिक मार्गों के माध्यम से संपर्क होता था। इस अवधि में भारत और चीन के बीच कोई बड़ा राजनीतिक या सैन्य गठबंधन नहीं था, और दोनों देशों का मुख्य ध्यान अपनी–अपनी आंतरिक समस्याओं पर था।

औपनिवेशिक काल (18वीं – 20वीं शताबदी):

औपनिवेशिक काल में भारत पर ब्रिटिश साम्राज्य का शासन था और चीन भी पश्चिमी साम्राज्यवादी शक्तियों के प्रभाव में था। ब्रिटिश साम्राज्य ने भारत से चीन में अफीम का निर्यात करना शुरू किया, जिसके परिणामस्वरूप अफीम युद्ध हुआ और चीन को पश्चिमी शक्तियों से समझौतों की ओर मजबूर किया गया। अफीम युद्ध के परिणामस्वरूप, चीन को बड़े पैमाने पर नुकसान उठाना पड़ा और भारत के साथ उसका व्यापारिक संबंध घटा। 1950 के दशक की शुरुआत में, दोनों देशों के बीच व्यापार और सांस्कृतिक संबंधों

को बढ़ावा देने के प्रयास किए गए। 1954 में पंचशील समझौते पर हस्ताक्षर किए गए, जो भारत और चीन के बीच शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व की नींव बनी। पंचशील पांच सिद्धांतों पर आधारित थाकृसमानता और आपसी सम्मान, संप्रभुता की अस्मिता, और बाहरी हस्तक्षेप से बचाव। इस समझौते ने दोनों देशों के कूटनीतिक संबंधों को एक नई दिशा दी और दोनों देशों के बीच विश्वास निर्माण की शुरुआत की।

भारत–चीन युद्ध (1962):

भारत–चीन युद्ध 1962 में हुआ, जो सीमा विवाद के कारण दोनों देशों के बीच एक गंभीर संघर्ष बन गया। यह युद्ध भारत और चीन के बीच अरुणाचल प्रदेश (तब दक्षिणी तिब्बत के रूप में चीन द्वारा दावा किया गया) और लद्दाख के क्षेत्रों को लेकर हुआ था। 1959 में तिब्बत में चीन द्वारा किए गए हस्तक्षेप और 1960 में चीन और भारत के बीच सीमा पर असहमति के बाद दोनों देशों के रिश्तों में तनाव बढ़ गया था। विवाद की जड़ें पंचशील समझौते की भावना में असहमति और चीन के द्वारा भारतीय सीमा के कुछ हिस्सों पर दावा थे। भारत ने अपनी सीमा के भीतर सैनिकों की तैनाती की, जिससे चीन ने आक्रामकता बढ़ा दी। अक्टूबर 1962 में, चीन ने भारतीय क्षेत्रों में आक्रमण किया, और भारतीय सैनिकों को बुरी तरह से हराया। युद्ध के परिणामस्वरूप, चीन ने विवादित क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया और बाद में एकतरफा युद्धविराम घोषित किया। यह युद्ध भारत के लिए एक बड़े आघात के रूप में आया, और इसने भारत की रक्षा नीति और कूटनीतिक दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण बदलाव किए। चीन ने अपनी स्थिति में कुछ क्षेत्रीय बदलाव किए, लेकिन युद्ध के बाद दोनों देशों के रिश्तों में तनाव बना रहा।

2020 में गलवान संघर्ष:

2020 में गलवान घाटी में भारत और चीन के सैनिकों के बीच संघर्ष हुआ, जो दोनों देशों के बीच सीमा विवाद का एक गंभीर और निर्णायक मोड़ बन गया। यह संघर्ष 15–16 जून 2020 की रात को हुआ, जब भारतीय सैनिकों और चीनी सैनिकों के बीच लद्दाख की गलवान घाटी में हिंसक झड़प हुई। इस संघर्ष में दोनों देशों के सैनिकों के बीच शारीरिक संघर्ष और पत्थरबाजी की घटनाएँ हुईं। इस झड़प में भारतीय सेना के 20 जवान शहीद हो गए, जबकि चीन के सैनिकों की संख्या की आधिकारिक जानकारी सार्वजनिक नहीं की गई, लेकिन अनुमान है कि कई चीनी सैनिक भी मारे गए। यह संघर्ष चीन द्वारा भारत की सीमा पर अपनी सैन्य उपस्थिति को बढ़ाने और पूर्वी लद्दाख में गतिरोध उत्पन्न करने के प्रयासों का परिणाम था। गलवान संघर्ष ने भारत और चीन के रिश्तों को बहुत प्रभावित किया। दोनों देशों के बीच कूटनीतिक वार्ता और सैन्य स्तर पर बातचीत के बावजूद, सीमा पर तनाव बढ़ गया। भारत ने चीन के खिलाफ कड़ा रुख अपनाया और सुरक्षा बलों की तत्परता को बढ़ाया। यह संघर्ष दोनों देशों के बीच सैन्य और कूटनीतिक रिश्तों में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन का प्रतीक बना।

अध्ययन के उद्देश्य:

1. भारत और चीन की राजनीतिक संबंधों का अध्ययन करना।
2. भारत और चीन के राजनीतिक संबंधों में आने वाली चुनौतियों व समस्याओं का अध्ययन करना

साहित्यिक सर्वेक्षणः

पी.एम. केमथ(2011),"भारत–चीन संबंधः एशियन सेंचुरी के लिए एक एजेंडा", यह पुस्तक भारत और चीन के उभरते संबंधों को ष्एशियन सेंचुरीष् की दृष्टि से विश्लेषित करती है। लेखक ने दोनों देशों के आर्थिक, कूटनीतिक, और भू–राजनीतिक मुद्दों पर गहन विचार किया है। पुस्तक में सहयोग और प्रतिस्पर्धा के क्षेत्रों को संतुलित दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है। पंचशील सिद्धांत से लेकर आधुनिक कूटनीतिक संबंधों तक, यह पुस्तक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य और भविष्य की संभावनाओं पर प्रकाश डालती है।

वाई. योगामा रेड्डी (2012),"भारत–चीन संबंधः 21वीं सदी में प्रोफ़ाइल बदलना", इस पुस्तक में भारत और चीन के बदलते संबंधों को 21वीं सदी के वैश्विक परिप्रेक्ष्य में देखा गया है। लेखक ने दोनों देशों के आर्थिक उदय, व्यापारिक साझेदारी, और कूटनीतिक चुनौती पर चर्चा की है। पुस्तक में सीमा विवाद, सुरक्षा चिंताओं, और वैश्विक नेतृत्व में दोनों देशों की प्रतिस्पर्धा का उल्लेख है। यह पुस्तक नीति–निर्माताओं और शोधकर्ताओं के लिए उपयोगी है, क्योंकि इसमें उभरते भारत–चीन संबंधों की जटिलताओं को गहराई से समझाया गया है।

शिव कुणाल वर्मा (2016),"1962 द वॉर", यह पुस्तक 1962 के भारत–चीन युद्ध का एक गहन और सटीक विवरण प्रस्तुत करती है। लेखक ने युद्ध की पृष्ठभूमि, रणनीतिक निर्णयों, और दोनों देशों की सैन्य तैयारियों का विश्लेषण किया है। पुस्तक ऐतिहासिक तथ्यों और सैन्य दस्तावेज़ों पर आधारित है, जिससे यह युद्ध के कारणों और परिणामों को समझने में मदद करती है। यह केवल एक युद्ध के विवरण तक सीमित नहीं है, बल्कि भारत के रक्षा ढांचे की कमजोरियों और राजनीतिक नेतृत्व के निर्णयों पर भी ध्यान केंद्रित करती है।

रोहित अग्रवाल(2020),"एज एंड बैकः 1962 भारत–चीन युद्ध", यह पुस्तक 1962 के युद्ध के दौरान भारतीय सेना के साहस और बलिदान पर प्रकाश डालती है। लेखक ने युद्ध की कठिन परिस्थितियों और सैनिकों के जज्बे को विस्तार से वर्णित किया है। पुस्तक में युद्ध के भू–राजनीतिक प्रभाव और चीन की रणनीति को भी गहराई से समझाया गया है। रोहित अग्रवाल ने युद्ध के दौरान हुई गलतियों और उनकी सीखों पर विशेष ध्यान दिया है। यह पुस्तक शोधकर्ताओं और इतिहास में रुचि रखने वालों के लिए उपयोगी है, क्योंकि यह युद्ध को एक मानवीय दृष्टिकोण से देखती है।

ए.जी. नूरानी (2011),"भारत–चीन सीमा समस्या 1846–1947: इतिहास और कूटनीति", यह पुस्तक भारत–चीन सीमा विवाद के ऐतिहासिक और कूटनीतिक पहलुओं का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करती है। ए. जी. नूरानी ने 1846 से 1947 तक के समय को कवर करते हुए, ब्रिटिश भारत और चीन के बीच सीमाओं के निर्धारण की प्रक्रिया का विस्तार से वर्णन किया है। लेखक ने ऐतिहासिक दस्तावेज़ों और कूटनीतिक पत्राचार के माध्यम से विवाद के मूल कारणों को समझाने की कोशिश की है।

भारत–चीन राजनीतिक संबंधः चुनौतियाँ और संभावनाएँः

भारत और चीन एशिया की दो सबसे बड़ी शक्तियाँ हैं, जिनके बीच राजनीतिक संबंध इतिहास, भूगोल, और रणनीतिक प्रतिस्पर्धा के कारण जटिल और बहुआयामी हैं। दोनों देशों के बीच सहयोग और प्रतिस्पर्धा का यह अद्वितीय मिश्रण वैश्विक राजनीति को प्रभावित करता है।

चुनौतियाँः

भारत–चीन संबंधों में सबसे बड़ी चुनौती सीमा विवाद है। लद्दाख के अक्साई चिन क्षेत्र और अरुणाचल प्रदेश (जिसे चीन दक्षिणी तिब्बत मानता है) को लेकर दोनों देशों के बीच तीव्र असहमति है। 1962 का युद्ध और 2020 में गलवान संघर्ष ने इस विवाद को और जटिल बना दिया। दोनों देश एशिया में प्रमुख शक्ति बनने की होड़ में हैं। चीन की श्बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिवश और भारत की श्एक्ट ईस्ट पॉलिसीश जैसी रणनीतियाँ क्षेत्रीय नेतृत्व के लिए उनकी प्रतिस्पर्धा को दर्शाती हैं। चीन–पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (CPEC) और अन्य सहयोग भारत के लिए चिंता का कारण हैं। चीन की पाकिस्तान को सैन्य और आर्थिक सहायता से भारत की सुरक्षा चुनौतियाँ बढ़ती हैं। भारत और चीन के बीच व्यापारिक संबंध मजबूत हैं, लेकिन व्यापार घाटा भारत के पक्ष में नहीं है। भारतीय उद्योगों को सस्ते चीनी उत्पादों से प्रतिस्पर्धा करनी पड़ती है। भारत अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ श्क्वाडश का हिस्सा है, जिसे चीन अपनी क्षेत्रीय सुरक्षा के लिए खतरा मानता है।

संभावनाएँः

भारत और चीन एशिया की दो सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाएँ हैं। दोनों देशों के बीच आर्थिक सहयोग से न केवल व्यापार बढ़ सकता है, बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। भारत और चीन का संबंध प्राचीन काल से बौद्ध धर्म और रेशम मार्ग के माध्यम से जुड़ा है। इन सांस्कृतिक संबंधों को आधुनिक समय में भी मजबूत किया जा सकता है। भारत और चीन दोनों विकासशील देश हैं और जलवायु परिवर्तन से संबंधित मुद्दों पर संयुक्त रूप से काम कर सकते हैं। पर्यावरण संरक्षण और अक्षय ऊर्जा के क्षेत्र में सहयोग की संभावनाएँ हैं। ब्रिक्स, एससीओ (शंघाई सहयोग संगठन), और अन्य बहुपक्षीय मंचों पर भारत और चीन का साथ काम करना संबंधों को सुधारने का अवसर देता है। दोनों देशों के लोगों के बीच पर्यटन, शिक्षा, और सांस्कृतिक आदान–प्रदान से आपसी समझ और सहयोग बढ़ सकता है। भारत और चीन के राजनीतिक संबंधों में चुनौतियाँ और संभावनाएँ दोनों मौजूद हैं। सीमा विवाद और सामरिक प्रतिस्पर्धा जैसी समस्याएँ हैं, लेकिन आर्थिक सहयोग, सांस्कृतिक संबंध, और बहुपक्षीय मंचों पर संयुक्त प्रयास भविष्य में संबंध सुधारने के लिए आधार प्रदान कर सकते हैं। संतुलित और व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाकर दोनों देश एशिया और विश्व की स्थिरता और समृद्धि में योगदान कर सकते हैं।

निष्कर्ष:

भारत और चीन के राजनीतिक संबंध जटिल और बहुआयामी हैं। सीमा विवाद, जैसे अक्साई चिन और अरुणाचल प्रदेश के मुद्दे, और 1962 के युद्ध के बाद से आपसी अविश्वास प्रमुख चुनौतियाँ बनी हुई हैं। 2020 के गलवान संघर्ष ने इन संबंधों को और अधिक तनावपूर्ण बना दिया। इसके अलावा, चीन–पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (CPEC), हिंद–प्रशांत क्षेत्र में रणनीतिक प्रतिस्पर्धा, और व्यापार घाटे जैसी समस्याएँ भी संबंधों में बाधाएँ हैं। इसके विपरीत, दोनों देशों के बीच सहयोग की व्यापक संभावनाएँ हैं। ब्रिक्स और एससीओ जैसे बहुपक्षीय मंचों पर उनकी साझेदारी वैश्विक स्तर पर सकारात्मक योगदान दे सकती है। जलवायु परिवर्तन, पर्यावरण संरक्षण, और अक्षय ऊर्जा के क्षेत्रों में आपसी सहयोग से दोनों देशों को लाभ हो सकता है। ऐतिहासिक सांस्कृतिक संबंध और पर्यटन, शिक्षा, तथा व्यापार के माध्यम से जनसंपर्क बढ़ाने के प्रयास भी आपसी संबंधों को सुधार सकते हैं। समझदारी और कूटनीति के साथ, भारत और चीन अपने विवादों को हल कर सकते हैं। यदि दोनों देश प्रतिस्पर्धा को सीमित करते हुए सहयोग पर ध्यान केंद्रित करें, तो वे एशिया और विश्व की स्थिरता और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

गांधी, जगदीश, पी,"भारत–चीन इन एशियाई शताब्दी में",नई दिल्ली, 2001, पृष्ठ संख्या 66 –69

फ्रेंकल और अन्य,"भारत– चीन संबंधः प्रतिद्वंद्विता और सगाई ,"नई दिल्ली, 2005, पृष्ठ संख्या 116 –119

गोपाल जी मालविया ,"इंडिया एंड चाइनीज फॉरेन पॉलिसीज इन पर्सपेक्टिव", संपादित सुरजीत मैन सिंह, रेडिएंट पब्लिशर्स, न्यू दिल्ली, 1998, पृष्ठ संख्या 146 –149

गवर, जॉन, द प्रबल्ड ,"बीसवीं शताब्दी में चीन–भारतीय प्रतिद्वंद्विता", सिएटल, 2001, पृष्ठ संख्या 221 –223

पी.एम. केमथ,"भारत–चीन संबंधः एशियन सेंचुरी के लिए एक एजेंडा", ज्ञान पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली, 2011।

रेड्डी वाई योगामा,"भारत चीन संबंधः 21 वीं सदी में प्रोफ़ाइल बदलना", ज्ञान पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली, 2012।

कुणाल शिव वर्मा,"1962 द वॉर जो भारत और चीन", रूपा और सह प्रकाशन –2016, नई दिल्ली

अग्रवाल रोहित ,"एज एंड बैक 1962 भारत–चीन युद्ध", पेंटागन प्रेस नई दिल्ली, 2020,

नूरानी ए जी,"भारत–चीन सीमा समस्या 1846–1947 इतिहास और कूटनीति", OUP इंडिया पब्लिशर्स, एड। 2011,